ट्रेन के स्टेशन पर पहुँचने से बहुत पहले ही माइकल तय कर चुका था कि स्टेशन पहुँचकर उसे क्या करना है!

खुली खिड़की के पास वाली सीट पर एक तेरह-चौदह साल की लड़की बैठी थी। उसकी बगलवाली सीट ही खाली थी जहाँ माइकल को बैठना पड़ा।

"क्या फुटैली तकदीर है!" माइकल ने सोचा। मेरी बगल में बैठने वाला शख्स कोई मर्द भी तो हो सकता था! कोई महिला होती तो और भी अच्छा होता। थोड़ा तजुरबेकार बन्दा होता तो ज़्यादा परेशानी नहीं होती।

माइकल ने अपने ओवरकोट की बाईं जेब में रखी पिस्तौल को टटोलकर देखा। पिस्तौल सख्त, ठण्डी और आश्वस्तिदायक लगी। खैर, देखा जाएगा। अब क्या किया जा सकता है।

माइकल ने फिर घड़ी देखी। बीस मिनिट। गाड़ी को स्टेशन पहुँचने में बीस मिनिट और लगेंगे। लेकिन इस लड़की को कैसे समझाया जाए कि स्टेशन आने पर इसे क्या करना है! यह तो किताब पढ़ने में लगी है!

एक विचित्र मुठभेड़

आर.जे. स्पेन्स

बगल में बैठी लड़की ने माइकल के दाढ़ी-मूँछ वाले चेहरे पर एक उड़ती नज़र डाली। और फिर पहले की तरह खिड़की से बाहर देखने लगी।

लड़की के बाल सुनहरे और आँखें नीली थीं। वह बिलकुल मासूम गुड़िया जैसी लग रही थी। लड़की की गोद में एक किताब खुली हुई थी।

"इसे तो कोई भी देखकर अनदेखा कर देगा।" माइकल ने सोचा। "कोई अधेड़ और रईस मर्द होता तो कितना अच्छा होता!"

माइकल ने घड़ी देखी। पच्चीस मिनिट। स्टेशन आने में अभी पच्चीस मिनिट बाकी थे। बशर्ते, ट्रेन बीच में कहीं रुक न जाए।

काफी जोखिम वाली स्थिति थी। स्टेशन पर ज़रूर पुलिस मौजूद होगी। शायद हर डिब्बे के बाहर दोनों तरफ चार-चार। मुसाफिरों को बगैर हंगामा खड़ा किए बाहर जाने देंगे, लेकिन जैसे ही माइकल डिब्बे से बाहर कदम रखेगा, वे उसे दबोच लेंगे।

"यहीं आपकी ज़रूरत पड़ेगी बेबीजी!" माइकल ने सोचा। मेरी पिस्तौल आपकी कनपटी पर लगी होगी और आप चिल्लाकर कहेंगी, "उसे मत पकड़ना, वरना वह मुझे मार देगा।" फिर हम आहिस्ता-आहिस्ता स्टेशन से बाहर आ जाएँगे। बाहर मेरे दोस्त की कार हमारा इन्तज़ार कर रही होगी। पुलिस कुछ नहीं कर पाएगी – जब तक तुम मेरे कब्ज़े में हो। हम आराम से निकल जाएँगे। हो सकता है नहीं भी निकल पाएँ। उस सूरत में मुझे तुम्हारा भेजा उड़ाना पड़ेगा। आयम सॉरी, लेकिन क्या किया जाए!

माइकल रास्ते में पहले ही एक आदमी को मार चुका था, और इसीलिए इस धक्का-मुक्की में फँस गया था। माइकल कोई पेशेवर हत्यारा नहीं है। लेकिन दिक्कत यह हुई कि जब वह बैंक से पैसे उड़ाकर भाग रहा था, एक आदमी बीच में आ गया। गरीब-सा था और साला रास्ता रोककर खड़ा हो गया, मानो हीरो बनना चाहता हो! अब उसे मारता नहीं तो और क्या करता? दूसरा रास्ता क्या था? बस तो उसे उड़ाया और भागकर भीड़ में घुस गया।

कुछ घण्टे पुलिस के साथ लुकाछिपी चलती रही और फिर उसने दौड़ते हुए यह ट्रेन पकड़ ली। पुलिसवालों ने उसे इस ट्रेन में चढ़ते देख लिया था, लेकिन इससे पहले कि वे कुछ कर पाते, ट्रेन स्पीड पकड़ चुकी थी।

माइकल ने फिर घड़ी देखी। बीस मिनिट। गाड़ी को स्टेशन पहुँचने में बीस मिनट और लगेंगे। लेकिन इस लड़की को कैसे समझाया जाए कि स्टेशन आने पर इसे क्या करना है। यह तो किताब पढ़ने में लगी है। मैं एक पर्ची पर लिखकर दे देता हूँ कि इसे क्या करना है। ताकि ऐन वक्त पर यह घबरा न जाए या बेहोश ही न हो जाए, वरना मेरा सारा प्लान चौपट हो जाएगा।

कैसे मालूम?

दो ज़ेन साधक घूमते-घामते एक तालाब तक पहुँचे। तालाब के पानी में मछलियाँ साफ नज़र आ रही थीं। एक ने कहा, "मछलियाँ कितने आनन्द से तैर रही हैं।"

दूसरे ज़ेन साधक ने जवाब दिया, "मछली हुए बगैर तुम यह कैसे कह सकते हो कि वे आनन्द से तैर रही हैं?"

पहला साधक बोला, "तुम भी तो मैं नहीं हो। मैं हुए बगैर तुम कैसे जान सकते हो कि मछलियों को कैसा लग रहा है, यह मैं कैसे बता रहा हूँ?"

"बेटी! तुम्हारे पास पैंसिल होगी?" माइकल ने लड़की से पूछा।

लड़की ने किताब से सिर उठाकर एक नज़र उसे देखा और कोट की जेब से पैंसिल निकालकर दे दी।

माइकल ने जेब से कागज़ का एक टुकड़ा निकाला और उस पर लिखा – "घबराओ मत। बस जो कहा जाए वह करो। वरना तुम्हारी जान को खतरा है। मेरे पास पिस्तौल है। स्टेशन आने पर मैं तुम्हारी कनपटी पर पिस्तौल रखूँगा। बाहर पुलिस मेरा इन्तज़ार कर रही होगी। हम लोग चुपचाप कार में निकल जाएँगे। चिल्लाना मत। बोलने का काम मैं करूँगा। तुम सिर्फ इतना कहोगी – इसे मत पकड़ना वरना यह मुझे मार देगा।"

माइकल ने पैंसिल लौटाई। लड़की ने चुपचाप पैंसिल लेकर जेब में रख ली और फिर किताब पढ़ने में लग गई।

कुछ पल बाद माइकल ने धीरे से अपनी पर्ची किताब के खुले पन्नों पर रख दी। पर्ची पढ़कर भी लड़की काफी देर सिर झुकाए रही।

"समझदार है।" माइकल ने सोचा।

तभी लड़की ने सिर उठाकर उसे देखा और इतनी देर उसे लगातार घूरती रही कि खुद माइकल को निगाहें चुरानी पड़ीं।

लगता है इसे विश्वास नहीं हो रहा माइकल ने सोचा और ओवरकोट की जेब से थोड़ी-सी पिस्तौल निकालकर लड़की को दिखाई। पिस्तौल देखकर भी लड़की ने कोई भाव प्रकट नहीं किया और चुपचाप किताब में सिर घुसा लिया।

"कहीं यह गूँगी तो नहीं है?" माइकल को शक हुआ और वह सिर्फ उसकी आवाज़ सुनने की खातिर लड़की से बोला, "किताब काफी दिलचस्प लगती है, क्यों?"

"हाँ! रहस्य-रोमांच की कहानी है। मैंने खत्म कर ली। स्टेशन आने में अभी देर है। आप पढ़ेंगे? लीजिए।" वह अन्त पर पहुँच गया। कहानी एक खूनी के बारे में थी जो ट्रेन से सफर कर रहा था। वह अपने बगलवाले को शूट करना ही चाहता था कि सहसा उसने पाया कि उसकी जेब में उसकी पिस्तौल तो है ही नहीं। कहानी का शीर्षक था "खूनी और जेबकतरा"।

ट्रेन स्टेशन में प्रवेश कर रही थी। माइकल ने किताब से निगाह उठाकर लड़की की तरफ देखा तो पाया कि उसकी पिस्तौल लड़की के हाथ में थी।

पुनर्लेखन - स्वयंप्रकाश

चित्र : दिलीप चिंचालकर